बच्चों की शिक्षा कैसी हो?

बच्चों का दखिला ऐसे स्कूल में न करायें जिसमें होमवर्क बच्चों को ज्यादा मिलता हैं। बच्चे स्कूल के होमवर्क, ट्यूशन के होमवर्क, घर के होमवर्क के आगे कुछ सोच नहीं पाते हैं, जिससे उनका मानसिक विकास रूक जाता हैं। बच्चों को जो होमवर्क में मिलता हैं जीवन में वह कभी काम नहीं आता हैं। ऐसे स्कूल में दाखिले से अच्छा नगर परिषद, जिला परिषद के स्कूलों में पढ़ाये। हमारे देश के भूतपूर्व राष्ट्रपति ऐ.पी.जे. अब्दुल कलाम

जिला परिषद के स्कूल में पढ़े थे। जब गाँव में थे तो ग्राम पंचायत के स्कूल में पढ़े, नगर परिषद के स्कूल में पढ़े। अब्दुल कलाम कभी कॉन्वेट स्कूल में नहीं पढ़े और भारत के सबसे बड़े वैज्ञानिकों में उनका नाम हैं। पढ़ाई से वैज्ञानिक होने का कोई संबंध नहीं हैं। वैज्ञानिक होने का संबंध दिमाग से हैं। आप का दिमाग कितना फ्री है कि चिन्तन कर सकता हैं, उसी से वह वैज्ञानिक बनता हैं।

ज्यादा पढ़ाई करके, बहुत होमवर्क करके दुनिया में कोई भी वैज्ञानिक नहीं हुआ। आइन्स्टाइन, न्यूटन, एडिसन का नाम सुना है आपने, ये सब स्कूल से भागे हुए थे या स्कूल से निकाल दिये गये थे।

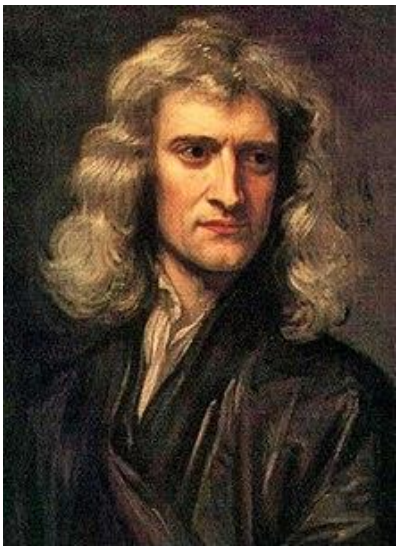

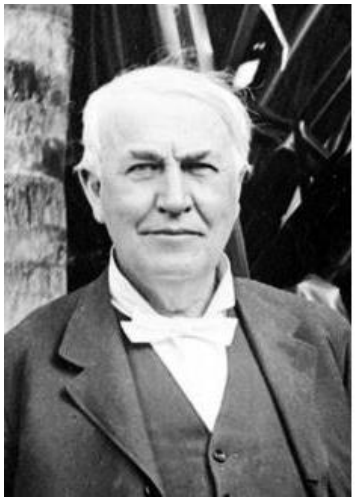

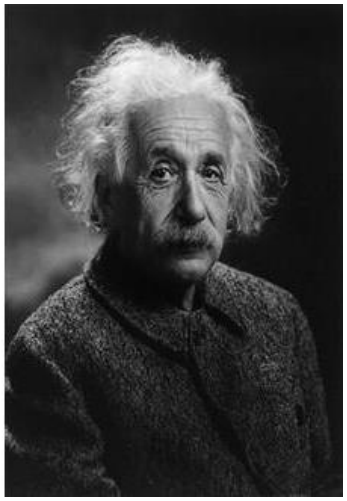

आइन्सटाइन ने कक्षा 9 में स्कूल छोड़ दिया, न्यूटन ने कक्षा 8 में स्कूल छोड़ दिया, एडिसन को स्कूल से कक्षा 3 में निकाल दिया था। मैक्सवेल बहुत बड़ा वैज्ञानिक था कक्षा 7 से ही स्कूल छोड़कर भाग गया था। जबच्चों का स्वतंत्र चिन्तन होता हैं वही वैज्ञानिक बन सकते हैं। स्कूल की पढ़ाई का

बच्चों को जीवन में कोई लाभ नहीं मिलता हैं फिर भी सबकुछ चल रहा हैं। बच्चों से किसी को कोई मतलब नहीं हैं, न तो स्कूल को, न स्कूल के टीचर को और न ही बच्चों के गार्जियन को। सब अपनी ड्यूटी पूरी कर रहे हैं। इसलिए आप अपने बच्चों को ऐसी शाला में भर्ती करवाइये जहां बच्चा स्वतंत्र चिन्त कर सके,

ज्यादा खेले–कूदे, जहाँ बच्चे के ऊपर होमवर्क का भार नहीं हो या कम हो। क्षेत्रीय भाषा या हिन्दी माध्यम के स्कूल में भर्ती करवाइये। अंग्रेजी माध्यम में कभी भर्ती मत करवाइये। बच्चों के ऊपर अंग्रेजी माध्यम की इतनी तकलीफ होती है कि बच्चों का सबसे ज्यादा समय ट्रांसलेशन में बीत जाता है।

घर की अपनी भाषा हैं और स्कूल की अंग्रेजी भाषा हैं तो हर बार बच्चा अपनी भाषा से अंग्रेजी भाषा में ट्रांसलेशन ही करता रह जायेगा। इसी में बच्चे के जीवन का महत्वपूर्ण समय निकल जाता हैं। पांचवी कक्षा तक अपनी क्षेत्रीय भाषा ही सिखाइये। जब बच्चे की उम्र 10 से 12 वर्ष की हो जाये तब अंग्रेजी सिखाइये, लेकिन माध्यम के रूप में नही भाषा के रूप में। अंग्रेजी माध्यम कभी अच्छा नहीं हैं।

बच्चों मे नंबर लाने के लिए कभी भी दूसरे बच्चे से तुलना मत कीजिए कि किसी बच्चें का 90 प्रतिशत नंबर आता हैं और तुम्हारा 70 प्रतिशत नंबर आता हैं। बच्चों की तुलना इसलिए नही करनी चाहिए कि हर बच्चा अपने आप में यूनिक होता हैं, विशेष होता हैं। 90 प्रतिशत नंबर पाने वाले बच्चे को बहुत सी ऐसी बातें हैं

जिसकी जानकारी नहीं हो सकती हैं लेकिन 70 प्रतिशत नंबर पाने वाले को ऐसी बातों की जानकारी हो सकती हैं। स्पर्धा में जरूर भाग लेने दीजिए लेकिन ट्रॉफी पाने के दबाव में नही, स्वतंत्र रूप से। यह कोई जरूरी नहीं है कि माता–पिता बच्चों के भविष्य के बारे में सभी निर्णय ले सकते हैं। ऐसा इसलिए जरूरी नहीं है कि माता–पिता के ऊपर ऐसे निर्णयों में समाज का दबाव होता है और आज–कल के समाज में लोगों को अपने बच्चे को डॉक्टर, इन्जीनियर, कंपनी का मैनेजर बनाने की होड़ लगी हैं। और सामाजिक दबाव में कोई जरूरी नहीं है कि माता–पिता बच्चें के भविष्य के लिए सही निर्णय ले पायें। समाज में इसके अतिरिक्त भी बहुत सारे क्षेत्र हैं जिधर बच्चा अपने स्वभाव से जा सकता हैं। किसान क्यों नहीं होना चाहिए? समाज के दबाव में यदि आप बच्चे पर कोई निर्णय थोपेंगे तो बच्चा खुद जो बनना चाहता है वह नहीं बन पायेगा। भविष्य सभी का ईश्वर ने तय किया हैं। मेरी माँ ने मुझे इंजीनियरिंग की बहुत बड़ी पढ़ाई करवाई।

अभी मैं वो सब छोड़कर इस काम में लग गया हूँ, तो मेरी माँ कहती हैं– तेरे नसीब में यही सब था। तो मैने उसको बोला – मुझे फालतू में इंजीनियरिंग क्यों करवाया, जिसमें 15–16 लाख रूपये खर्च भी हो गये और मेरा 15 साल बर्बाद हो गए। मान लो मैं वो 15 –16 साल अपना बर्बाद नहीं करता और उसकी जगह भजन–कीर्तन करता। मान लो में किसी सच्चे सन्त के पास आकर कुछ सीख लेता तो 15 साल में 15 हजार सभायें होतीं और 1 लाख कार्यकर्ता होते। तो सबका नसीब, सबका भविष्य भगवान का तय किया हुआ हैं और उसके आगे किसी की भी नहीं चल सकती हैं। बच्चे को क्या करना है बच्चे से पूछकर उसमें सहयोग कीजिए। माता–पिता होते हुए अपने बच्चे को जो सुविधा देने में सक्षम हों वो सुविधा अपने बच्चे को दें।

स्वध्याय के लिए उसे, समाज कैसे चलता हैं, उसका ज्ञान दें। जैसे अपने बच्चे को एक दिन पोस्ट ऑफिस लेकर जाइये और पोस्ट ऑफिस में A to Z सभी तरह के कार्यों का अध्ययन करवाइये। ऐसे एक दिन उसे रेलवे स्टेशन लेकर जायें और रेलवे स्टेशन में होने वाले सभी तरह के कार्यों का ज्ञान दीजिए।

इसी तरह उसे एक बार महानगर पालिका लेकर जाइये, फिर किसी दिन उसे गौ–शाला में लेकर जाइये, ऐसे ही एक दिन उसे मन्दबुद्धि बच्चों के स्कूल या विकलांग बच्चों के स्कूल पर ले जाइये। ऐसी जगहों पर ले जाकर उसे व्यवहारिक ज्ञान दीजिए। इसमें से जो वो सीखेगा उसी में से उसके रास्ते खुलेंगे।

ये जो क्लास की स्टड़ी है ये दुनिया की सबसे खराब स्टड़ी हैं। जो हम पढ़ते हैं, वह दुनिया का कोई बच्चा नहीं पढ़ता हैं, ना फ्रान्स में, ना जापान में, ना जर्मनी में, न स्वीडन में, न स्विटरलैण्ड में, न डेनमार्क में, न अमेरिका में। हमको जो पढ़ाया जाता हैं वह दुनिया में कोई नहीं पढ़ता हैं।

सर्टीफिकेट की दृष्टि से बच्चे को उतना ही पढ़ाइये जितना सर्टिफिकेट पाने के लिए आवश्यक हो। इससे ज्यादा पढ़ाने की आवश्यकता नहीं हैं। ज्यादा ज्ञान अपने बच्चे को समा का दीजिए, परिवार का दीजिए, दुनिया का दीजिए।

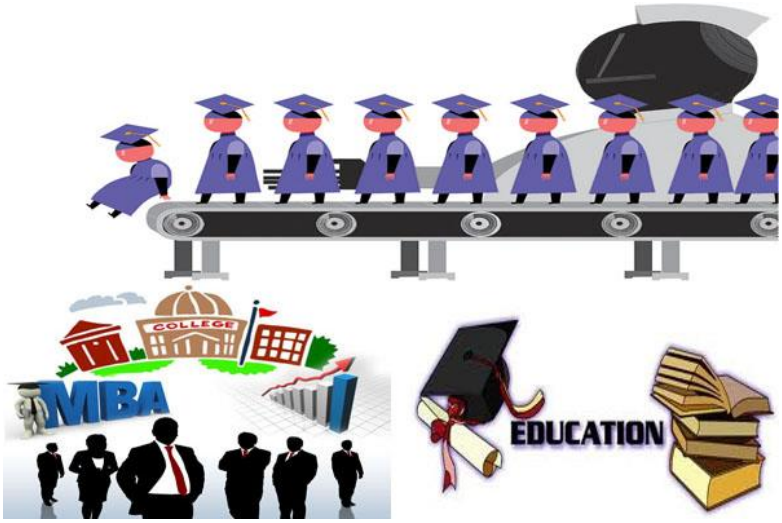

ये सब ज्ञान उसके जीवन में जरूर काम आयेगा और उसमें से उसके रास्ते भी निकल आयेंगे। सर्टिफिकेट के लिए एज्युकेशन बिल्कुल बेकार की हैं, उसमें ज्ञान कुछ भी नही जो जीवन में काम आये। सर्टिफिकेट की मान्यता तब तक हैं जब तक आपके बच्चे के पास ज्ञान नहीं हैं।

हिन्दुस्तान में जिन लोगो को ज्ञान हो जाता हैं उनकी डिग्री कोई नही पूछता हैं। जैसे– सन्त ज्ञानेश्वर की डिग्री किसी ने नहीं पूछी, समर्थ गुरू रामदास की डिग्री कभी देखी आपने, छत्रपति शिवाजी महाराज की डिग्री पूछी आप ने, शम्भा जी महाराज की डिग्री पूछी आपने, तुकड़ो जी महाराज की डिग्री कभी पूछी आपने। इसलिए जब व्यक्ति को ज्ञान हो जाता हैं तो हम उसके ज्ञान को पूजते हैं उसकी डिग्री कभी नहीं पूछते हैं। डिग्री तभी तक पूछी जाती है जब तक उसके ज्ञान का आपको पता नहीं हैं।

दुनिया में किसी की भी पूजा हुई हैं, समाज ने किसी को भी महान बनाया है तो बिना डिग्री के हुई हैं। इन्दिरा गाँधी 8 वी कक्षा में फेल थी। इन्दिरा गाँधी रवीन्द्र नाथ टैगोर के गुरुकुल में पढ़ती थी और 8वीं में दो बार फेल हुई और वह भारत की 17 वर्ष तक प्रधानमंत्री रहीं। इन्दिरा गाँधी की डिग्री

को कोई नहीं पूछता हैं। उसने जो किया है उसको पूछते हैं। ज्ञान हमेशा डिग्री से बड़ा होता हैं। ऐसा पूरी दुनिया में होता हैं।

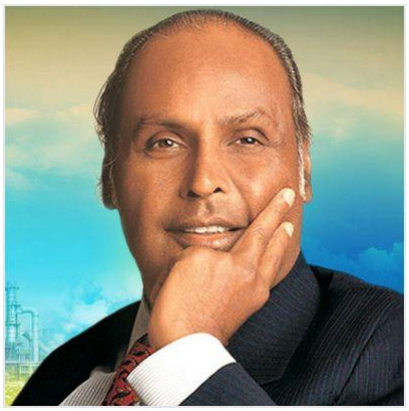
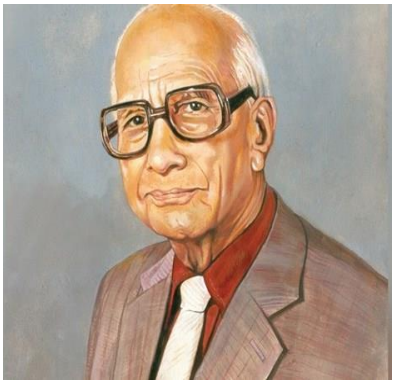

धीरू भाई अम्बानी की डिग्री, 9वीं फेल थे, उनके पिता ने स्कूल से निकाल दिया और उससे पूछा तू क्या करेगा तो धीरू भाई ने कहा मैं पैसा कमाऊंगा तो धीरू भाई के पिता जी ने अपने दोस्त के पैट्रोल पम्प पर उनको नौकरी पर रखवा दिया, गुजरात में जूनागढ़ नाम के शहर में। वही धीरू भाई अम्बानी पैट्रोल भरा करते थे और धीरू भाई का आज लाखों करोड़ रूपये का एम्पायर हैं। धीरू भाई नौवीं फेल थे लेकिन उनके नीचे काम करने वाले लोग बड़े–बड़े इंजीनियर, पी.एच.डी., एम.डी., जैसी बडी–बड़ी डिग्रियों वाले लोग हैं, नौकर की तरह। ऐसे ही घनश्याम दास बिड़ला चौथी फेल थे और उसके बाद स्कूल छोड़कर व्यवसाय में लग गये और वो भी लाखों करोड़ के एम्पायर के मालिक हैं। ऐसे ही जमशेद जी टाटा एक भी क्लास पढ़ने नही गया। कभी स्कूल नहीं गये। उनको घर पर एक टीचर पढ़ाता था। आज उनका एम्पायर लाखों करोड़ो का हैं।

दुनिया में डिग्री लेकर कोई महान हुआ हैं ऐसे दो–चार ही मिलेंगे। बिना डिग्री के बहुत ऊंचाई पर गये ऐसे सैकड़ों लोग हैं। पुणे में किर्लोस्कर कंपनी हैं, इसका मूल संस्थापक 5वीं पास हैं। डिग्री का महत्व है नौकरी पाने के लिए, सिपाही होने के लिए, क्लर्क होने के लिए, नौकर बनने के लिए। अपने बच्चे को यदि नौकर बनाना है तो डिग्री पर ध्यान दीजिए और यदि समाज में कोई ऐसा स्थान दिलाना हैं जिसकी सब इज्जत करें तो ज्ञान को महत्व दीजिए। इसलिए 10–15 साल महत्वपूर्ण समय हैं जो स्कूलों में एवं उनके होमवर्क में व्यर्थ चला ता हैं। इसमें अपने बच्चों को वेद पढ़ाइयें, उपनिषद पढ़ाइये, गीता पढ़ाइये, भारत के और दूसरे शास्त्रों को पढ़ाइयें।

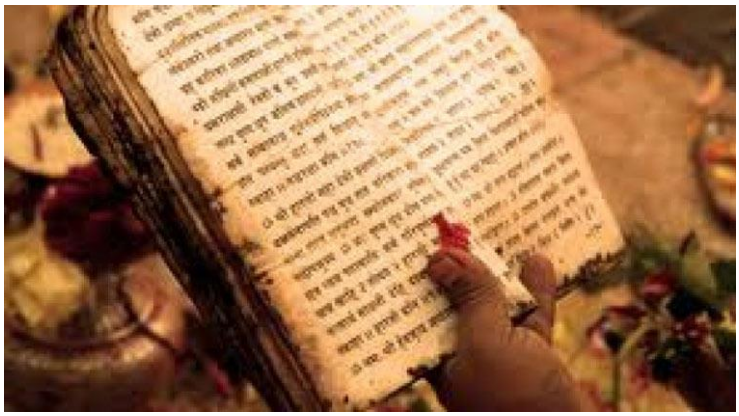

उसके साथ में 10वीं–12वीं की परीक्षा दिलवाइये, नंबर के लिए नहीं बल्कि डिग्री के लिए। इसके बाद उनको ज्ञान सिखाने की कोशिश करें। सर्टिफिकेट ज्यादातर 10वीं और 12वीं का ही लगता हैं। उसके पहले का कोई नहीं पूछता हैं तो 5वीं, 6वीं, 7वीं, 8वी की डिग्री के पीछे पड कर टाइम क्यों खराब करना।

अभी मैं जो काम कर रहा हूँ वह डिग्री वालों ने नही सिखाया हैं। मैने स्वध्याय से सीखा हैं। जो मैने स्वध्याय से सीखा हैं वही मुझे काम आ रहा हैं। डिग्री वाला तो कभी काम नहीं आ रहा हैं।

बच्चों को भारतीय संगीत का अभ्यास कराना चाहिए। चाहें तो भारतीय गायन, भारतीय वादन या भारतीय नृत्य तीनों में से कोई एक जरूर सिखाना चाहिए। पेन्टिंग/चित्रकला का अभ्यास करवाना चाहिए, मूर्तिकला का अभ्यास करवाना चाहिए।

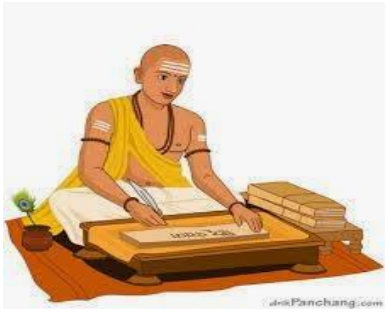

हमने ऐसा प्रयोग किया हैं, तब बोल रहा हूँ। हमने एक स्कूल चलाया हैं उत्तर प्रदेश में। अब वह उत्तराखंड में चला गया हैं। वहीं पर एक शहर हैं मसूरी (देहरादून) वहीं पर हमने फेल बच्चों के लिए गुरूकुल चलाया हैं। वहाँ पास बच्चों का प्रवेश नहीं होता हैं। सिर्फ फेल बच्चों को भर्ती करते हैं। 5वीं फेल, 8वीं फेल और जो बच्चा 2 बार फेल होता हैं उसका दाखिला सबसे पहले होता हैं। वह स्कूल मेरे दोस्त और उनकी पत्नी, दोनो मिलकर चलाते हैं। उसका नाम हैं संदीपनी गुरूकुल। उस गुरूकुल में कोई कमरा नहीं है, पेड़ के नीचे क्लास लगती हैं। पढ़ाई कैसे होती हैं? मान लो एक दिन हम पढ़ाई शुरू करते हैं पानी के बारे में तो पानी का ए बी सी डी से लेकर जैड तक उनको पढ़ाया जाता हैं।

जैसे पानी क्या होता हैं? कैसे बनता हैं? कहाँ से आता हैं? पीने के लिए कैसे प्रयोग करना हैं? नहाने के लिए कैसे प्रयोग करना हैं? आदि-आदि जानकारियाँ पानी के बारे में बच्चों को दी जाती हैं। जब पानी के बारे में बच्चों को पूरा ज्ञान दे दिया जाता हैं तो एक क्लास समाप्त होती हैं ऐसी एक क्लास तीन महीने की हो सकती हैं, चार महीने की हो सकती हैं, पाँच महीने की हो सकती हैं, ऐसा विषय वस्तु पर निर्भर करता हैं। वहाँ 40-45

मिनट के घंटे नहीं होते हैं। सुबह एक बार चालू होता हैं और जब बच्चों को भूख लग जाती हैं क्लास बन्द हो जाती हैं। इसके बाद बच्चे भोजन करते हैं, विश्राम करते हैं और विश्राम पूरा होने पर दोबारा क्लास चालू होती हैं। एक विषय जब तक समाप्त नही होता तब तक दूसरा विषय नहीं चलता हैं। एक विषय समाप्त होने पर उस विषय पर परीक्षा होती हैं। परीक्षा कैसे होती हैं? उनको पानी के बारे में जितना ज्ञान मिला हैं उसके आधार पर परीक्षा होगी। परीक्षा में उनको ऐसा काम दिया जात हैं जैसे किसी गाँव में एक तालाब हैं और उस तालाब में पानी की समस्या हैं। जैसे – पानी वहाँ पर रूकता नहीं हो या बहुत ज्यादा हो जाता हो, पानी से वहां बाढ़ आ जाती हैं या बारिश नहीं होती है तो ऐसी समस्याओं का समाधान उन बच्चों को करना होता हैं। ऐसे बच्चो ऐसे गाँव में जाते हैं और गाँव के लोगो से पानी की समस्या के बारे में बात करते हैं और तालाब की समस्या को ठीक करते हैं और ठीक करके गुरूकुल में वापस आते हैं। तब उनको माना जाता हैं कि पास हो गये, और यदि समस्या का समाधान नहीं कर पाये तो उनको दोबारा से दूसरे गाँव में जाना पड़ेगा जब तक की समस्या का समाधान न हो जाये।

पानी का विषय पूरा हुआ तो अब दूसरा विषय आ जायेगा। खेती का विषय आ गया या मिट्टी का विषय आ गया, ऐसे विषय वहाँ चलते हैं। ऐसे विद्यार्थी जब पढ़कर निकलते हैं तो घर नही जाते हैं। वो कहते कि घर में मजा नही आता हैं। क्योंकि घर में माता–पिता दबाव डालते हैं कि ऐसा करना, वैसा नहीं करना। लेकिन गुरूकुल में उनको कोई दबाव नहीं रहता हैं, जो उनके

दिल में आये वो करें। अब उनके माँ–बाप शिकायत करते हैं कि आप ने तो बच्चों को बिगाड़ दिया, ये तो हमसे दूर भाग गये। तो हम लोग उनसे कहते हैं कि जरा आप सोचिए कि ये आपसे दूर क्यों भागते हैं, आपने इनको पैदा किया, हमने पैदा नहीं किया, फिर ये आपके पास क्यों नही आना चाहते और हमारे पास क्यों रहना चाहते हैं तो उसका एक ही कारण हैं कि हम उनका अपमान नहीं करते हैं। हमेशा बच्चों का सम्मान करते हैं और कोशिश करते हैं कि उनको ज्ञान मिले, दबाव नहीं डालते हैं कुछ भी।

ये विद्यार्थी जब पढ़कर तैयार होते हैं तो पानी के बारे में कोई भी, कोई सवाल करे तो जो जवाब दुनिया के किसी प्रोफेसर को मालूम नहीं होगा वो उनको मालूम हैं। ऐसे बच्चे, पानी को लेकर जब भी समस्या आयेगी उसका समाधान वो करेंगें।

इसी तरह उनको जंगल में ले जाया जाता है जहाँ उनको अलग–अलग पेड़ों के बारे में ज्ञान दिया जाता हैं और उन अलग–अलग पेड़ों पर बैठने वाले अलग–अलग पक्षियों के बारे में ज्ञान दिया जाता हैं।

जैसे – कौन सा पक्षी किस पेड़ पर बैठता हैं? इसी पर क्यों बैठता हैं दूसरे पर क्यों नही बैठता हैं? वह पक्षी कब सुबह निकलता हैं और कब शाम को वापस आता हैं? इस प्रकार उनको इस विषय में सम्पूर्ण ज्ञान हो जाता हैं। इसके बाद उन बच्चों के बीच में किसी जुलॉजी के प्रोफेसर को हम बुलाते हैं फिर बच्चों को प्रश्न करते हैं और प्रोफेसर जवाब नहीं दे पाते हैं लेकिन बच्चे जवाब दे देते हैं। प्रोफेसर जवाब देने के लिए किताब ढूंढता हैं और

बच्चे तुरन्त–तुरन्त सवालों का जवाब दे देते हैं। तो प्रोफेसर कहते हैं कि ये तो मेरे भी गुरू हैं। प्रोफेसर वहाँ ज्यादा देर टिक नहीं पाता क्योंकि प्रोफेसर को पुस्तक का ज्ञान हैं और बच्चों को व्यवहारिक ज्ञान हैं, सामने से अनुभव किया हुआ ज्ञान हैं।

इस प्रकार अभ्यास करने के बाद बच्चे जैसी ही पढ़ाई पूरी करके निकलते हैं, हर जगह सरकार के लोग इनको बुला लेते हैं। यह स्कूल 10 वर्ष से चलता हैं और लगभग 1340 बच्चे वहां से पढ़कर निकलते हैं और एक भी बच्चा बेरोजगार नहीं हैं। सबके पास 10–15 हजार मासिक पगार वाली नौकरियाँ हैं लेकिन डिग्री किसी के पास नहीं हैं। तो आप कहेंगें नौकरियां कहां मिली हुई हैं? तो उनकी हार्बेरियम में नौकरियाँ हैं, म्यूजियम में उनकी नौकरियां हैं, जहाँ पर जीवित हार्बेरियम और म्युजियम होते हैं वहां पर उनको नौकरियां हैं। क्योंकि ज्ञान उनके पास हैं और दुनिया में बहुत सारी नौकरियां ज्ञान आधारित हैं। डिग्री से उनका कोई संबंध नहीं हैं।

आजकल जो बच्चे इन्जीनियरिंग की डिग्री लेकर निकलते हैं उनको कुछ भी व्यवहारिक ज्ञान नहीं होता हैं और बड़ी–बड़ी कंपनियों में ऐसे इंजीनियरों को कंपनी के मैकेनिक काम सिखाते हैं। क्योंकि कंपनी में काम कर रहे ITI/डिप्लोमा वाले को इंजीनियरिंग की डिग्री वाले से ज्यादा ज्ञान हैं।

ऐसे बच्चों के पास तो डिग्री होती है लेकिन ज्ञान नहीं होता हैं, जिसको उन्हे अलग से सिखाना पड़ता हैं। जब ज्ञान देना ही पड़ता हैं तो शुरु से ही ज्ञान दें। इसलिए ऐसी शिक्षा पद्धति होनी चाहिए जो ज्ञान आधारित हो, डिग्री

आधारित नहीं। ज्ञान पहले हैं डिग्री बाद में। डिग्री मिले तो ठीक नहीं तो ज्ञान हैं ही अपने पास में। ऐसा नियम भी अब आ गया हैं कि सीधे 10वीं की परीक्षा देना हैं, बीच में कोई परीक्षा देने की जरूरत नहीं हैं।

आज–कल के स्कूल की बिल्डिंगों में चलते हैं। कक्षाओं के लिए कमरे होते हैं और उसमें बैंच लगे होते हैं जिस पर बच्चों को बैठाया जाता हैं। बैंच पर बच्चों को क्यों बैठना चाहिए, इसका हमें ज्ञान नहीं है फिर हम अपने बच्चो को उस पर बिठाते हैं और बच्चों को उस पर बैठने क अभ्यास नहीं होता हैं। बच्चों को बैंच पर जबरदस्ती बैठाने पर 10 से 20 मिनट में वह बोर हो जायेंगे। बच्चे इधर देखेंगे, उधर देखेंगे।

क्योंकि बच्चों को बैंच पर बैठने का अभ्यास नहीं हैं लेकिन हम बच्चों को मारकर, धमकाकर जबरदस्ती उस पर बैठाते हैं। सभी टीचर आते हैं और बच्चों को जबरदस्ती चुप करवाते हैं। बच्चों को चुप क्यों रहना, वह तो बोलने के लिए पैदा हुआ हैं, चुप रहने के लिए नहीं हैं। फिर कोई दूसरा टीचर आयेगा, बोलेगा Keep Silent चुप रहो, आपस में बात मत करो। आपस में बच्चे बात नहीं करेंगे तो उनकी मित्रता नही होने वाली हैं एक दूसरे से। तो हमलोग इतने मूर्ख लोग हैं जो उनको उल्टी–उल्टी बातें सिखाते हैं।

क्लास रूम स्ट्रेट लाइन होती हैं। लेकिन प्रकृति की बनाई हुई कोई भी चीज कभी स्ट्रेट लाइन नहीं होती हैं। पेड़ कभी भी स्ट्रेट लाइन नहीं होते हैं। पहाड़ कभी भी स्ट्रेट लाइन नहीं होता हैं, नदी कभी भी स्ट्रेट लाइन नहीं होती हैं। जब प्रकृति की बनाई हुई वस्तुएं स्ट्रेट लाइन नहीं हैं तो आप क्यों अपने बच्चों को स्ट्रेट लाइन में फंसा रहे हैं।

हमारे शहरों में बड़े–बड़े फ्लैट्स हैं, अपार्टमेन्ट हैं, सब स्ट्रेट लाइन में हैं। लेकिन गाँव में कौन सी चीज स्ट्रेट लाइन में हैं? गाँव में गली टेढ़ी–मेढ़ी हैं। जो लोग स्टेट लाइन वाले अपार्टमेन्ट में रहते हैं उनमें ज्यादातर स्थिति में प्रेम और भाईचारा नहीं हैं और जो टेढ़ी–मेढ़ी गलियों में रहते हैं उनमें प्रेम और भाईचारा अधिक होता हैं। स्ट्रेट लाइन हमेशा एक दूसरे को काटती हैं। इसलिए गाँव के पुराने घर कभी भी स्ट्रेट लाइन में नहीं मिलेंगे। टेढ़े–मेढ़े ही मिलेंगे। प्रकृति जैसी हैं वैसे ही गाँव होते हैं, इसलिए गाँव में प्रकृति जैसा प्रेम और भाईचारा हैं और गाँव जो स्ट्रेट लाइन हैं वह प्रकृति के विरूद्ध हैं। इसलिए दुनिया के शहरों में ही मारा–मारी और काटा काटी सबसे ज्यादा हैं।

हम बच्चे को स्ट्रेट लाइन वाले स्कूल में ही भेज रहे हैं और रोज 6 घण्टे मार–मारकर बैठा रहे हैं, चुप करा रहे हैं, इधर मत देख, उधर मत देख। उसके लिए आपने स्कूल को जेल बना दिया हैं। और जब छुट्टी होती हैं तो

ऐसे भागते हैं बच्चे जैसे जेल से छूटे हों। और किसी भी बच्चे के दिल से पूछो कल स्कूल जाना हैं तो बोलेगा – नहीं जाना हैं। क्योंकि स्कूल में मानसिक तकलीफ हैं उसको। घर में बच्चे स्वतंत्र रूप में रहते हैं, खेलते हैं, कूदते हैं। ऐसे ही गुरूकुल या स्कूल होना चाहिए जैसा घर हैं। बच्चे का स्वभाव गाय के बछड़े जैसा होता हैं, खुला रहता हैं तो खुशी से इधर–उधर कूदता हैं उसके बाद अपनी माँ के पास आ जाता हैं और बांध दो तो बहुत तकलीफ में रहता हैं। ऐसे ही बच्चे भी होते हैं। वह भागेंगे–दौड़ेगे फिर अपनी माँ के पास आ जायेगें। ये जो बच्चों का विकास हैं बहुत महत्वपूर्ण हैं, ये स्कूल नहीं दे सकता उसको। ऐसा गुरूकुल दे सकता हैं, जहाँ डिग्री के लिए पढ़ाई नहीं होती हैं।

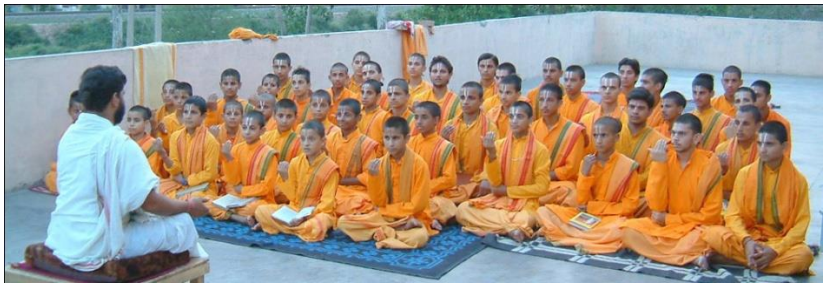

अपने पास ज्यादा पैसा रखना पाप होता हैं। इसलिए ज्यादा पैसे अपने पास नहीं रखना, अपने लिए कम से कम रखना और समाज के लिए ज्यादा रखना।

पढ़ाई के माने सीखना, ज्ञान लेना और उसका कोई मतलब नहीं है। पढ़ाई के माने ABCD नहीं हैं। पढ़ाई के माने कखगघ नहीं हैं। ये तो अक्षर ज्ञान हैं, इसका पढ़ाई से कोई संबंध नहीं हैं। ज्ञान जो जीवन को चलाने के लिए उपयोगी हैं, वह पढ़ाई का हिस्सा हैं।

राम–कृष्ण भी गुरूकुल में ही पढ़े थे। इनके बाद के सभी लोग गुरूकलों से ही निकले हैं। इसलिए आगे भी निकलेंगे बस वैसे ज्ञान देने वाले गुरू तैयार हो जायें। जिससे ज्ञान आधारित पढ़ाई हो सके। डिग्री आधारित पढ़ाई भारत में कभी भी नहीं रही, ये अंग्रेजों के यहाँ की पढ़ाई हैं। जब अंग्रेज भारत आये तो ऐसी पढ़ाई शुरू करवा दी और आज उनके चले जाने के 60 साल

बाद भी हम इसको चालू रखे हैं, अंग्रेजों के कार्य को आगे बढ़ाने में मदद कर रहे हैं।

बच्चे जिस दिन स्कूल नहीं जाना चाहें उनको उस दिन स्कूल मत भेजिए। उनको मार–मार कर स्कूल मत भेजिए। क्यों नही जायेग? फेल हो जायेगा। और पास होकर क्या करने वाला हैं। जो फेल होने से आप डर रहे हैं। मेरा तो ये मानना है कि जो बच्चे फेल हो गये वो ज्यादा अच्छे हैं क्योंकि उनका दिमाग अभी खराब नही हुआ हैं। जिनको 100 प्रतिशथ नम्बर आ गया वो तो बिल्कुल गये। क्योंकि ऐसे बच्चों के दिमाग में $(X+Y)^2$ ही रहेगा।

इसलिए बच्चों के फेल होने से डरिए मत। बच्चों को अधिक अंक लाने का दबाव मत दीजिए, पास होने का दबाव मत दीजिए। क्योंकि नंबर से डिग्री से दुनिया में कभी भी कुछ हुआ नहीं, आगे भी होगा नहीं।

आकाश, पृथ्वी और वायु ये तीनो के स्पर्श में रहकर जो पढ़ेगा वही सही ज्ञान ले पायेगा। एक्सपर्ट बनायेंगे तो एक ही विषय तक सीमित हो जायेगा। इसलिए एक्सपर्ट बनाने की कोशिश मत करिए। कोशिश कीजिए कि बच्चे को थोड़ा–थोड़ा सभी विषयों का ज्ञान हो। चिकित्सा का भी हो, धर्म का भी हो, आध्यात्म का भी हो, भारत का भी हो, विदेश का भी हो, थोड़ा–थोड़ा सभी विषयों का ज्ञान हो। क्योंकि जिन्दगी सभी विषयों के ज्ञान से मिलकर चलती हैं। बच्चों को सामान्य ज्ञान हो, नैतिक ज्ञान हो और सभी विषयों का ज्ञान हो तो वो सबसे ज्यादा उपयोगी होगा।

मण्डन मिश्र की पत्नी थी, उन्होंने शंकराचार्य को चुनौती दी और कहा कि आप का ज्ञान मेरे ज्ञान से कम हैं तो शंकराचार्य ने कहा कैसे कम हैं तो उन्होंने कहा कि आप अभी तक गृहस्थ आश्रम में प्रवेश नहीं किये हैं, मैने किया हैं। तो मेरे पास आपसे ज्यादा ज्ञान हैं। आप ने ब्रह्मचर्य का पालन किया हैं और मैने भी किया हैं, मैने जीवन के 25 साल ब्रह्मचर्य का पालन किया हैं विद्यार्थी जीवन में, तो वो जीवन तो मैनें भी जीया हैं जो आप जी रहे हैं। मैंने उसके बाद गृहस्थ आश्रम में प्रवेशछ किया और आप ने अभी तक नहीं किया हैं। तो गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करके जो ज्ञान मुझे मिला हैं वो ज्ञान आपके पास नहीं है। तो शंकराचार्य ने कहा ठीक है शास्त्रार्थ हो जाए और शास्त्रार्थ जब हुआ तो शंकराचार्य हार गये और मण्डन मिश्र की धर्म पत्नी जीत गयीं। तो शंकराचार्य को उन्होंने कहा कि आप जाइये और अपने जीवन को गृहस्थ आश्रम वाला बनाइये, फिर मेरे पास शास्त्रार्थ के लिए आइये।

संग्रहकर्ता – रोबिन सिराना

लेखक – श्री राजीव दीक्षित जी

अन्य पुस्तक डाउनलोड़ करने के लिए क्लिक करें